वेदों की ओर लौटो।

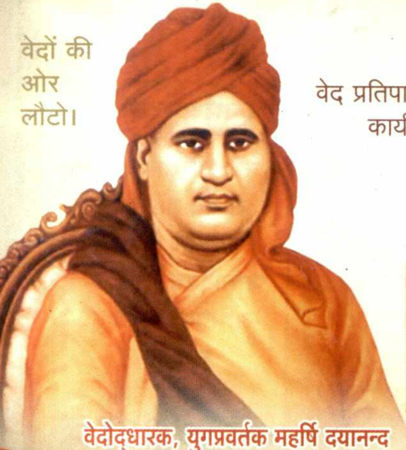

वेदोद्धारक, युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द

।। ओ३म् ।।

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को जन–जन तक पहुँचाने हेतु
कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

वर्ष १८ अंक ०१ १० जनवरी २०१८

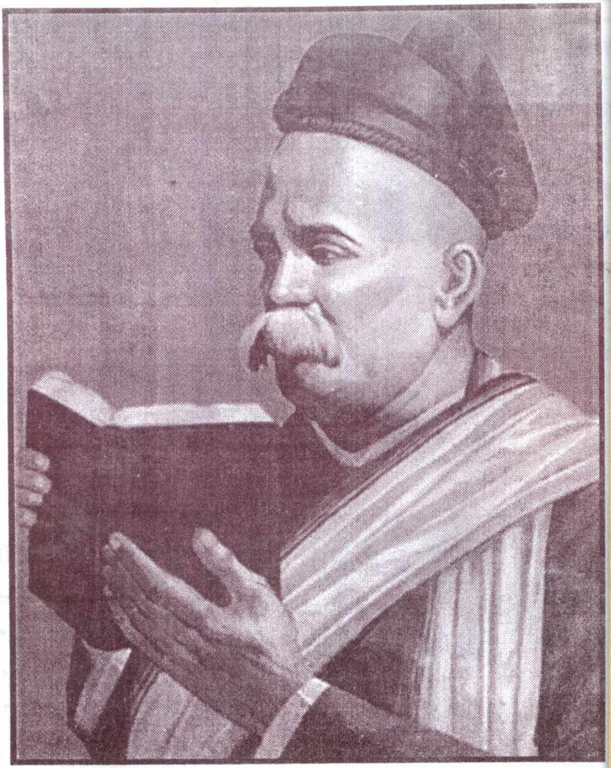

म.दयानन्द के अनन्य भक्त, सहयोगी, आर्य समाज पुणे के प्रथम प्रधान

न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द रानडे

पुण्यतिथि पर भावपूर्ण श्रद्धांजलि...!

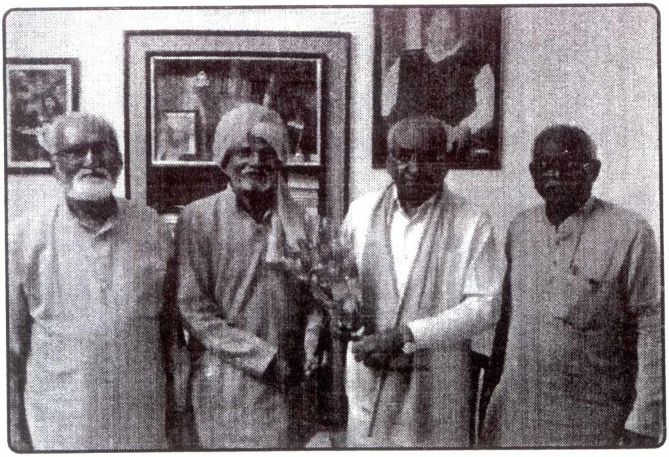

अभिनंदन!

ज्येष्ठ शिक्षाविद्, पूर्व सांसद डॉ.जे.एम. वाघमारे के ८४वें जन्मदिवस पर उनका अभिनंदन करते हुए सभाप्रधान डॉ.ब्रह्ममुनिजी, उपप्रधान श्री दिवे एवं पुस्तकाध्यक्ष प्रो.होलीकर।

ग्रन्थभेट

प्रसिद्ध मराठी लेखक श्री बाबा भांड को 'वैदिक अन्त्येष्टि संस्कार' यह ग्रन्थ भेंट करते हुए आर्य कार्यकर्त्ता डॉ.लक्ष्मण माने।

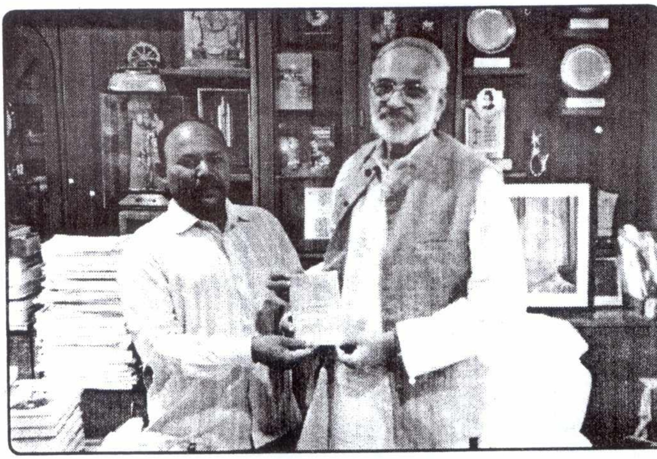

मराठी में अनूदित 'म.दयानंद ऋग्वेद भाष्य' ग्रन्थ सभा प्रधान डॉ.ब्रह्ममुनिजी को भेंट करते हुए लेखिका सौ.सविता एवं श्री बलवंतराव जोशी।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११८ कलि संवत् ५११८ विक्रम संवत् २०७४

दयानन्दाब्द १९४ पौष/माघ १० जनवरी २०१८

प्रधान सम्पादक	मार्गदर्शक सम्पादक	सम्पादक
माधव के.देशपांडे (९८२२२९५५४५)	डॉ.ब्रह्ममुनि (९४२१९५११९०४)	डॉ.नयनकुमार आचार्य (९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक
प्रा.देवदत्त तुंगार(९३७२५४१७७७) प्रा.ओमप्रकाश होलीकर(९८८१२१५६१६),
प्रा.सत्यकाम पाठक(९९७०५६२३५६), ज्ञानकुमार आर्य(९६२३८४२२४०)

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) सम्पादकीय ५
२) महर्षि के सहयोगी- न्या.रानडे ७
३) पू.स्वामी श्रद्धानन्द(गुरुजी)जन्मशताब्दी समारोह........ ११
४) मानव जीवन की सार्थकता १२
५) गणतन्त्रपतीन् नमामि (हास्यकाव्यम्)........ १४
६) अभिनन्दन समाचार १६

मराठी विभाग

१) वेद संदेश/दयानंद वाणी १७
२) म.दयानंदांच्या विचार व कार्याचे महत्त्व १८
३) आर्य समाज - 'एक महायज्ञ' २४
४) वार्ताविशेष २७
५) शोकवार्ता २९
६) महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे उपक्रम ३०

*** प्रकाशक ***
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज,
परली-वैजनाथ ४३१५१५

*** मुद्रक ***
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परळी-वै.

वैदिक गर्जना के शुल्क
वार्षिक रु.१००/-
आजीवन रु.१०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा।

श्रुतिसुगंध — मानवजीवन की आयु मर्यादा

अयं सहस्रमृषिभिः सहस्कृतः समुद्रऽइव पप्रथे।

सत्यः सो अस्य महिमा गृणे शवौ यज्ञेषु विप्रराज्ये।।

पदार्थान्वय– हे मनुष्यो! जो **(अयम्)** यह सभापति राजा **(ऋषिभिः)** वेदार्थवेत्ता राजर्षियों के साथ **(सहस्रम्)** असंख्य प्रकार के ज्ञान को प्राप्त **(सहस्कृतः)** बल से संयुक्त **(सत्यः)** और श्रेष्ठ व्यवहारों वा विद्वानों में उत्तम चतुर है**(अस्य)** इसका **(महिमा)** महत्त्व **(समुद्रइव)** समुद्र वा अन्तरिक्ष के तुल्य**(पप्रथे)** प्रसिद्ध होता है, तो**(सः)** वह पूर्वोक्त मैं प्रजाजन इस राजा के **(यज्ञेषु)**संगत राजकार्यों और **(विप्रराज्ये)**बुद्धिमानों के राज्य में**(शवः)** बल की**(गृणे)** स्तुति करता हूँ। (यजुर्वेद–३३/८३)

भावार्थ – जो राजादि राजपुरुष विद्वानों के संग में प्रीति करनेवाले साहसी, सत्यगुण, कर्म, स्वभावों से युक्त बुद्धिमान् के राज्य में अधिकार को पाये हुए संगत, न्याय और विनय से युक्त कामों को करें उनकी आकाश के सदृश कीर्ति विस्तार को प्राप्त होती है।

–० आगामी कार्यक्रम ०–

१) विद्यार्थीनिर्माता स्वामी श्रद्धानन्दजी (हरिश्चंद्र गुरुजी)-जन्मशताब्दी समारोह- दि.२८, २९, ३० अप्रैल २०१८/स्थान : श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम, परली

२) महर्षि दयानन्द जन्मदिवस दि.११ फरवरी तथा बोध रात्रि पर्व-दि.१३ फरवरी

३) स्वास्थ्य रक्षा व चिकित्सा प्रशिक्षण शिबिर, औरंगाबाद - १० से १७फरवरी

४) आर्य समाज गांधी चौक लातूर वार्षिकोत्सव दि.९, १०, ११ मार्च २०१८

–० आकाशवाणीपर प्रवचन सुनें ०–

वैदिक गर्जना के सम्पादक डॉ.नयनकुमार आचार्य के विभिन्न आध्यात्मिक विषयों पर मराठी लघुप्रवचनों का प्रसारण आकाशवाणी परभणी केन्द्र पर दि. २७, २८, २९, ३० जनवरी को प्रात: ५.५५ बजे तथा दि.१, २, ३, ४ फरवरी को प्रात: ७.०५ बजे होगा। कृपया श्रोतागण इन्हें अवश्य सुने। .... सभामंत्री

संपादकीयम्

दूषित इतिहास ही हमारा आदर्श क्यों..?

अच्छी व बुरी घटनाओं की यथार्थता प्रकट करनेवाली प्रक्रिया का नाम है इतिहास! इसके पृष्ठों पर कहीं प्रेरक, तो कहीं भयंकर दूषित प्रसंग अंकित हैं। इसमें विद्वानों, आचार्यों, धर्मात्माओं की आदर्श जीवनियाँ पढने मिलती हैं, तो कहीं पर उन्हीं विद्वानों व पण्डितों की गलतियों की कहानियाँ, जिसके कारण समाज का अधःपतन होना स्वाभाविक है। क्षत्रिय राजाओं ने कभी अपने शौर्य की गाथायें लिखी, तो कभी वे अपनेही अपराधों व प्रमादों के कारण पराजित भी हो गये। इतिहास में कहीं दया, करूणा, प्रेम, न्याय व शान्ति का सन्देश मिलता है, तो कहीं अन्याय, अत्याचार, क्रूरता व लढाई-झगडों के बर्बतापूर्ण प्रसंग, चाहे फिर वे विदेशियों के साथ हो या अपनों के साथ !

कितना दुर्भाग्य है कि, मानव का ही एक समूह दूसरे मानव समूह पर अन्याय ढहाता है। तब ऐसे में उन्हीं में से कोई शूरवीर उसका प्रतिकार कर शौर्यता का इतिहास खडा करता है। तो कोई ज्ञानी आत्मा अपने ज्ञानबल व सच्छील आचरण से बढते अज्ञान व अन्धःकार को नष्ट कर समाज में सदाचार, सभ्यता व संस्कृति की स्थापना में सहयोग देता है।

इतिहास के इन दोनों पक्षों को सामने रखकर जो समाज विवेकपूर्ण विचारों से वर्तमान का नवनिर्माण करता है, वही देश सचमुच प्रगतिशील कहलाता है। जहाँ की जनता कलुषित इतिहास को छोड विशुद्धता को ग्रहण करना सीख लेती है, वह देश निश्चित ही विकास के पथ पर सदैव आरुढ रहता है...! विश्वपटल पर जपान, इस्राईल जैसे देश इसी के प्रत्यक्ष उदाहरण है। लेकिन हम भारतवासियों ने क्या सीखा? हमारी भूतकालीन भूलों व गलतियों का भूत हमने अभी तक उतारा ही नहीं। हमारी ही संकीर्णता, आपसी फूट, अज्ञान-अविद्या, आलस्य व प्रमाद के कारण हम वर्षों तक विदेशियों के गुलाम रहें। अंग्रेजों के देश छोडकर चले जाने के ७० वर्षों बाद भी यहाँ की जनता ने भी कुछ सबक नहीं सीखा। स्वयं को धर्म के ठेकेदार कहलानेवाले लोग तथा राजनैतिक नेतागण व सुधारवादी दृष्टिकोन अपनानेवाले व्यक्तियों ने भी अपनी गलतियों में सुधार नहीं लाया। धार्मिक अज्ञान, विभिन्न कुरीतियाँ, धार्मिक कट्टरता आदि के दायरे में रहकर हमने स्वयं को बहुत ही संकुचित बनाकर रखा है। इन सबके अनिष्ट परिणाम हमारे सम्मुख हैं...।

आजकल मोदी सरकार के चलते हिन्दुत्ववाद बडे जोरों पर उभरकर आ रहा

है, तो उसके साथ ही इस्लाम, दलित, ओबीसी, कम्युनिस्ट आदियों में भी कट्टरता दृढ हो रही हैं। आये दिन नेतागण अनिष्टकारी वक्तव्य दे रहे हैं, जिनके परिणामों की चिंता कोई नहीं करता। देश में बढते जा रहे हिंसक दंगों व विभिन्न घटनाओं से देश किस दिशा में जा रहा है? इसपर कोई विचार करने के लिए तैय्यार नहीं है। कहीं पर साम्प्रदायिक विद्वेष की अग्नि धधक रही है, तो कहीं मनुष्यकृत जातिवाद की संकीर्णता का ज्वार आ रहा है।

महाराष्ट्र के भीमा नदी के तट पर स्थित 'कोरेगांव' इस छोटेसे गांव में हाल ही में हुए जातीय तणाव व उससे भडकी हिंसा इसका ताजा उदाहरण है। दो सौ वर्ष पूर्व पेशवाशाही द्वारा तत्कालीन दलितों पर जो अत्याचार हुए थे, तब उनका बदला लेने के लिए महार जाति के दलित समुदाय ने अंग्रेजों को साथ दिया था और अनेकों पेशवाओं का कत्लेआम हुआ। इस घटना को इस वर्ष दोसौ वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। इस उपलक्ष्य में विजय महोत्सव में सम्मिलित होने हेतु जा रही भीड पर पत्थरबाजी हुई और हिंसा भडक उठी। ऐसा माना जाता है कि, इससे एक दिवस पूर्व पुणे के शनिवारवाडा के समीप हुई यल्गार परिषद में सम्मिलित गुजरात के विधायक जिग्नेश मेवानी, छात्रनेता उमर खालिद के भडकानेवाले वक्तव्यों से भी कुछ उकसाने व शान्ति भंग करने की स्थिति उत्पन्न हुई। कोरेगांव की हिंसक घटना का निषेध करते हुए महाराष्ट्र बंद भी पुकारा गया। इस तरह की घटनाऐं मात्र हमारी बौद्धिक अपरिपक्वता व संवेदनशून्यता का परिणाम हैं। भारत में ऐसा सदैव होता आ रहा है और भविष्य में ऐसी घटनाओं की सम्भावना हैं। क्योंकि यहाँ के राजनीतिक व सामाजिक परिवेश को सुयोग्यतम विचारों की दिशा ही नहीं है। मत-पंथ व जाति की व्यवस्था यह मनुष्य की वैचारिक संकीर्णता का परिणाम है। जब तक इस विषैली बेल को जड से उखाडकर फेंका नहीं जायेगा और मानवता का सत्पथ स्वीकार नहीं होगा, तब तक कोरेगाव जैसी घटनायें घटती ही रहेगी। इस विषमता की खाई को नष्ट करना हो तो क्या कोई स्थायी उपाय है? हाँ एक ही है! और वह है महर्षि दयानन्द व उनकी वैदिक विचारधारा..!

बढते असहिष्णू व दूषित वातावरण को पूर्ण रूप से समाप्त करना हो, तो महर्षि सिद्धान्तों पर चलना होगा! लेकिन जानेगा व मानेगा कौन? क्योंकि यदि स्वामीजी का सत्य विचार अपनाया जाए, तो कट्टर सम्प्रदायवालों, पाखण्डी धार्मिक बाबाओं व स्वार्थी नेताओं की दुकानदारी बंद जो जायेगी...यह एक वास्तविकता है!

- नयनकुमार आचार्य

स्मृतिदिवस(१६ जनवरी) पर विशेष...

महर्षि के उदारमतवादी सहयोगी - न्यायमूर्ति रानडे

- (स्व.)डॉ.कुशलदेव शास्त्री

उन्नीसवीं शताब्दी के महाराष्ट्रीय समाजसुधारकों की यह उल्लेखनीय विशेषता रही है कि परस्पर वैचारिक मत-भेद होते हुए भी वे जिन विषयों पर सहमत होते थे व एक दूसरे की अनन्य भाव से सहाय्यता करते थे । प्रार्थना समाजियों तथा सत्यशोधक समाजियों में विभिन्न विषयों पर प्रतिकूल मत रहते हुए भी एकत्रित हो, मिलकर कार्य करनेकी भावना विद्यमान थी। इसी समन्वयशील प्रवृत्ति के कारण ही प्रार्थनासमाज के संस्थापक न्यायमूर्ति रानडे तथा सत्यशोधक समाज के संस्थापक महात्मा फुले ने अपने सहयोगी-शिष्यों के साथ, आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती की क्रमशः **'पुणे व्याख्यानमाला'** और **'विशाल शोभायात्रा'** का धूम-धाम के साथ भव्य आयोजन किया था । पुणे प्रवचन-काल में जिन महाराष्ट्रीय उदारमतवादी समन्वयशील समाजसुधारक न्यायमूर्ति महादेव (माधवराव) गोविन्द रानडे ने महर्षि दयानन्दजी को सक्रिय सहयोग प्रदान किया था, यहाँ उनकी संक्षिप्त जीवन-ज्योति शब्दबद्ध की जा रही है।

प्रार्थनासमाज के संस्थापक श्री महादेव गोविन्द रानडे (१८४२-१९०१) को कौन नहीं जानता? राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक एवं राष्ट्रीय उत्कर्ष में उनका असाधारण एवं अविस्मरणीय योगदान रहा है। कॉंग्रेस का 'नेशनल कॉंग्रेस' नामकरण रानडे ने ही किया था। आपको राष्ट्रीय जन-जागृति का जन्मदाता भी कहा जाता है। महर्षि दयानन्द की शिष्य परम्परा को महात्मा गाँधी तक लाने-पहुँचाने का श्रेय भी आपको दिया जाता है। महादेव गोविन्द रानडे महर्षि दयानन्द सरस्वती को अपना गुरू मानते थे, और गोपाल कृष्ण गोखले न्यायमूर्ति रानडे को अपना गुरू मानते थे, और लोक सेवक गोखले को राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी अपना गुरू मानते थे। इसी आधार पर कुछ समीक्षकों ने महर्षि दयानन्द सरस्वती को राष्ट्रप्रपितामह कहा है। महर्षि दयानन्द को पुणे निमंत्रित करनेवालों में न्यायमूर्ति रानडे का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है। महर्षि ने भी अपने पत्र में **'पुणे प्रवचन'** के व्यवस्थापक एवं प्रकाशकों में सर्वप्रथम म.गो.रानडे का ही उल्लेख किया है। पुणे के बुधवार पेठ-भिडेवाडा में सम्पन्न पन्द्रह प्रवचनों का

आयोजन एवं प्रकाशन उन्हीं के नेतृत्व में हुआ था। सनातनी तथा प्रतिगामी शक्तियों के विरोध की परवाह न करते हुए बडे धैर्य के साथ आप स्वामीजी की शोभायात्रा में सम्मिलित हुए थे। शोभायात्रा से जब घर लौटे तो आपके कपडों पर कीचड के धब्बे नजर आ रहे थे। घरवालों ने कारण पूछा तो आपने उत्तर दिया कि – 'जब मैं सबके साथ था, तो मुझे भी यह प्रसाद मिलना स्वाभाविक ही था।' शोभायात्रा को साहस एवं धैर्य के साथ सम्पन्न कराने में आपका उल्लेखनीय योगदान रहा है। शोभायात्रा के पश्चात् भिडेवाडा में सम्पन्न स्वागत समारोह में न्यायमूर्ति रानडे ने महर्षि को हार्दिक धन्यवाद दिया। साथ ही अपने अनुयायी–सहयोगियों की ओर से प्रतिमास या प्रतिवर्ष महर्षि के निर्देशानुसर वेदभाष्य लिपिबद्धकर्त्ता को पचास रूपये देने का अभिवचन भी दिया। महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित–विश्व की तीसरी 'आर्यसमाज' पुणे के ही न्यायमूर्ति रानडे प्रधान निर्वाचित हुए थे। सुप्रसिद्ध इतिहास–लेखक श्री हरिदत्त वेदालङ्कार के अनुसार – 'श्री रानडेजी ने आर्यसमाज मुम्बई में अनेक व्याख्यान दिए तथा उनके प्रभाव के कारण सुधारवादी नवयुवक आर्यसमाज की ओर आकृष्ट हुए थे।'

परमदेशहितैषी रानडे महर्षि के विश्वासपात्र व्यक्तियों में से थे। महर्षि ने उन्हें अपनी सम्पत्ति की उत्तराधिकारिणी– परोपकारिणी सभा के सभासद् के रूप में नियुक्त किया था। रानडेजी इस सभा के सक्रिय सभासद थे। महर्षि दयानन्दजी के बलिदान के पश्चात् २१ दिसम्बर १८८३ को सम्पन्न परोपकारिणी सभा की बैठक में श्री महादेवराव रानडेजी ने देश की सभी आर्यसमाजों को परोपकारिणी सभा की बैठक में श्री महादेव रानडेजी ने देश की सभी आर्यसमाजों को परोपकारिणी सभा से संलग्न करने का प्रस्ताव प्रस्तुत किया था। स्वामी दयानन्दजी सरस्वती के स्मृत्यर्थ 'दयानन्द आश्रम' की स्थापना करके पुस्तकालय, वैदिक पाठशाला, पुस्तक विक्री भण्डार, अनाथाश्रम, अद्भुत वस्तुसंग्रहालय, यन्त्रालय, सभागृह आदि विभागों को स्थापित और संचालित करने का प्रस्ताव भी २१ दिसम्बर १८८३ की परोपकारिणी सभा में आपने ही रखा था।

महर्षि दयानन्द से न्यायमूर्ति रानडे १८ वर्ष छोटे थे। आपकी स्वदेशप्रेम की भावना से महर्षि सुपरिचित थे, इसीलिए उन्होंने अपने पत्र में लिखा था कि – **'श्री रानडेजी का दृष्टिकोण हमेशा देशहित की ओर था।'**

रानडेजी जैसे समर्थ सहयोगी मिलने के बावजूद भी पुणे का आर्यसमाज चिरस्थायी क्यों नहीं हो सका? यह एक विचारणीय व चिंतनीय प्रश्न है। महर्षि

दयानन्द के समकालीन व पुणे के पौराणिक साहित्यकार विष्णु शास्त्री चिपळूणकर के अनुसार- 'स्थापना काल के पश्चात् दयानन्द द्वारा स्थापित पुणे आर्यसमाज का लगभग डेढ-दो वर्ष की अल्पावधि में दो-तीन बार पुनरूद्धार किया गया। तदनन्तर अन्त में वह 'आर्य धर्म विवेचन सभा' के रूप में रूपान्तरित होकर नाम शेष हो गया।' पुणे आर्यसमाज के स्वल्पजीवी होने का एक कारण यह भी हो सकता है कि - महर्षि दयानन्द के न्यायमूर्ति रानडे आदि अनुयायी महर्षि की तरह सुदृढ वेद भक्त नहीं थे। न्यायमूर्ति अन्तिम समय तक प्रथमस्तरीय प्रार्थनासमाजी रहे, बाद में और कुछ! यह बात भी निर्विवाद है कि न्यायमूर्ति रानडे आर्यसमाजी प्रचारकों को अन्तिम समय तक अपना सहयोग देते रहे। (सम्प्रति पुणे जनपद में नानापेठ-(डोके तालीम संघ), पिंपरी, नेहरूनगर, खडकवासला, खडकी, वारजे मालेवाडी आदि क्षेत्रों में आर्यसमाज की शाखाएँ हैं।)

श्रीयुत रानडेजी ने कम्बाला हिल मुम्बई से १६ अक्तूबर १८९४ को लिखे अपने एक पत्र में स्वामी नित्यानन्दजी और स्वामी विश्वेश्वरानन्दजी को मद्रास-प्रेसिडेन्सी के निम्नलिखित ९ व्यक्तियों के नाम लिखे जो स्वामीजी के कार्य में सहायक हो सकते थे-१)टी. रामचन्द अय्यर (द्वितीय न्यायाधीश चीफ कोर्ट बंगलौर), २) टी.नरसिंह अय्यंगर(दरबार बख्शी मैसूर), ३) दीवान बहादुर (रघुनाथराव कुम्भकोणम), ४) माननीय रायबहादुर (सभापति मुदालियर बेलारी), ५) श्री जी.सुब्रह्मण्य अय्यर, (सम्पादक हिन्दू, मद्रास), ६) माननीय सुब्रह्मण्य अय्यर (प्लीडर हाईकोर्ट मद्रास), ७) माननीय शंकर नायक, (प्लीडर हायकोर्ट, मद्रास), ८) श्री बलवन्तराय सहस्त्रबुद्धे, (मिलिटरी फाइनेन्स सुपरिण्टेण्डेण्ट ट्रिप्लिकेन मद्रास), ९) श्री विजय राघवचारलू, (प्लीडर डिस्ट्रीक्ट कोर्ट सलेम)। ये सब महानुभाव मद्रास प्राप्त के विभिन्न स्थानों के सुप्रसिद्ध एवं सुप्रतिष्ठित नेता थे। जनता इन्हें बडे सम्मान की दृष्टि से देखती थी। ये सभी बडे शिक्षा-सम्पन्न, उदार एवं सुधारवादी विचारों के व्यक्ति थे और रानडे महोदय को पूरी आशा थी कि इनके सहयोग से मद्रास में स्वामी नित्यानन्दजी का प्रचार-कार्य भली-भाँति सम्पन्न हो सकेगा।

श्री रानडे महोदय ने इस पत्र के साथ स्वामीजी को एक सार्वजनिक परिचय-पत्र भेजते हुए लिखा था- 'इस पत्र को आप जिस-जिस स्थान पर जाएँ, वहाँ पत्र में उल्लिखित महानुभावों को दिखाने की कृपा करें। मद्रास प्रान्त में पहुँचने के बाद आप अपनी सुविधानुसार विभिन्न स्थानों पर अधिक-से-अधिक समय लगाएँ।'' इस पत्र के साथ भेजे गए

परिचय-पत्र में रानडे महोदय ने लिखा था कि, 'ब्रह्मचारी नित्यानन्द और स्वामी विश्वेश्वरानन्द आर्यसमाज के सिद्धान्तों के प्रभावशाली प्रचारक हैं। यह संस्था पण्डित दयानंन्द सरस्वती द्वारा लगभग २० वर्ष पहले स्थापित की गई थी। उत्तर भारत में, विशेषकर पंजाब में आर्यसमाजों की संख्या १५० है। इस संस्था ने वहाँ अपना सुदृढ स्थान बना लिया है। दुर्भाग्यवश लगभग १० वर्ष पहले स्वामी दयानन्द सरस्वती... परलोक चले गए। उनके कुछ शिष्यों और अनुयायियों ने उनके द्वारा प्रारम्भ किये हुए कार्य को पूरा करने का भार अपने ऊपर ले लिया है। इनमें ब्रह्मचारी नित्यानन्द और स्वामी विश्वेश्वरानन्द निश्चित रूप से सबसे अधिक योग्य हैं। वे दोनों संस्कृत के अच्छे विद्वान् हैं और श्री नित्यानन्दजी अंग्रेजी भी जानते हैं। क्योंकि मद्रास प्रान्त में आर्यसमाज के उपदेशकों का दौरा नहीं हुआ है, मैंने उनसे प्रस्ताव किया है कि वे इस प्रान्त में भ्रमण करें और मुझे प्रसन्नता हैं कि उन्होंने बेंगलोर जाने के लिए समय निकाला है। उनका विचार मैसूर और उससे आगे मद्रास जाने का है। उनकी भाषण-शक्ति बहुत उच्चकोटि की है। मुझे पुरी आशा है कि वे अपना आशय शिक्षित समुदाय को समझा सकेंगे। आप उन्हें अन्यन्त प्रभावशाली उपदेशक समझेंगे। उनकी मित्रमण्डली उधर नहीं है। इसीलिए मैंने यह सार्वजनिक परिचय-पत्र देने का साहस किया है। मैं आशा करता हूँ कि आपकी सहायता से उनका उद्देश्य सफल होगा।'

इससे सात वर्ष पूर्व सन् १८८७ में येवला आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव (चैत्र कृष्ण-३ सम्वत् १९४४) के अवसर पर चार हजार से भी अधिक खचाखच भरी जनसमूह के समक्ष 'आर्य और अनार्य' विषय पर डेढ घण्टे तक अपना अध्यक्षीय भाषण देने के उपरान्त न्यायमूर्ति रानडेजी ने कहा था कि - "मुझ पर आर्यसमाज का बहुत उपकार है। स्वामीजी मुझसे अत्यन्त प्रेम रखते थे और मैं भी उन्हें आदर की दृष्टि से देखता था। मैं परोपकारिणी सभा का मेम्बर हूँ। स्वामीजी के परिश्रम का फल पंजाब में अच्छा हुआ है। मुझे यहाँ पर आर्यसमाज को देखकर अत्यन्त आनन्द हुआ है।"(येवला आर्यसमाज के वार्षिक प्रतिवेदन पर आधारित।)

जस्टिस महादेव गोविन्द रानडेजी द्वारा महर्षि को दी गई यह श्रद्धांजलि अविस्मरणीय है, जिसमें उन्होंने कहा था- "महर्षि दयानन्द में धार्मिक उत्साह भरा हुआ था। उनमें वीरोचित कर्मण्यता की भावना विद्यमान थी, जिसकी उत्पत्ति इस विश्वास से हुई थी कि कोई उच्च सत्ता मेरे कार्य का संरक्षण कर रही है। समय की

आवश्यकताओं को देखने की उन्हें जो सूक्ष्म दृष्टि प्राप्त थी, वह अलभ्य थी। उसमें लक्ष्य सिद्धि की दृढता ऐसी अटूट थी कि कोई भी विपत्ति व प्रतिकूलता उसे झूका न सकती थी। उन जैसी तत्परता और साधन-सम्पन्नता विरलों को ही प्राप्त होती है। उनकी सच्ची देशनिष्ठा समय से कहीं आगे बढी हुई थी। दया से द्रवित उनकी न्याय भावना देखते ही बनती थी। यही सब गुण और विशेषताएँ उनकी शक्ति की स्रोत थीं, जिन्होंने उन्हें आर्यसमाज जैसे महान् आन्दोलन को संचालित करने में समर्थ बनाया था।''

***

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा एवं शिष्यों द्वारा आयोजित

पू.स्वामी श्रद्धानन्द(हरिश्चंद्र गुरुजी) शताब्दी समारोह

दि.२८, २९ व ३० अप्रैल २०१८(शनि.,रवि., सोम.)

स्थान : श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम, परली-वै. जि.बीड

* नम्र निवेदन *

सभी सज्जनों व माता-बहनों को विदित कराते हुए हर्ष हो रहा है कि, असंख्य छात्रों के नवनिर्माता एवं तपस्वी आर्य सन्यासी, समाजसेवक पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी सरस्वती (हरिश्चंद्र गुरुजी) इस वर्ष अपने यशस्वी जीवन के सौ वर्ष पूर्ण कर रहे हैं। इस उपलक्ष्य में पूज्य स्वामीजी के जीवन व कार्यों का समुचित गौरव हो, इस उद्देश्य से समग्र आर्य जगत् की ओर से उनके **'जन्मशताब्दी समारोह'** का आयोजन हो रहा है। उपरोक्त तिथियों पर होनेवाले इस त्रिदिवसीय समारोह में आर्यजगत् के संन्यासी, विद्वान्, नेतागण, पू.गुरुजी के शिष्य तथा कर्मठ आर्यजन पधार रहे हैं।

समारोह के दौरान वेदपारायण यज्ञ, भजन, प्रवचन, विविध संमेलन आदि कार्यक्रम होंगें। अन्तिम दिन ३० अप्रैल को स्वामीजी का सभी की ओर से भव्य गौरव किया जायेगा। साथ ही ग्रन्थ विमोचन, गुरुजी के दिवंगत माता-पिता व दादीजी का स्मृति सम्मान व अन्य कार्यक्रम होंगें। अतः इस समारोह में सभी आर्यजन, शिष्यगण एवं राष्ट्र व धर्मप्रेमी सज्जन सपरिवार पधारें। समारोह के आयोजन व सफलता हेतु आर्थिक सहयोग भी प्रदान करें।

विनीत : म.आ.प्र.सभा, गुरुजी के शिष्य, आर्य समाज परली तथा राज्य की सभी आर्य समाजें

मानव जीवन की सार्थकता

- डॉ.ब्रह्ममुनि वानप्रस्थी

जन्म तथा मृत्यू ये दो अटल घटनाएं संसार का महान् आश्चर्य हैं। ये दो घटनाएं अगाध ज्ञान के ग्रन्थ हैं। किन्तु ये ग्रन्थ पढने आने चाहिए। जब कोई जीव-जन्तु जन्म लेता हैं तब वह माता-पिता से स्थूल शरीर को लाता है। किन्तु Some-thing तो माता-पिता से प्राप्त नहीं होता अपितु वह पिछले जन्म या अनेक जन्म के ज्ञान, गुण, स्वभाव, प्रवृत्ति आदि का 'Record' है। जब मानव जन्म लेता हैं तो इंस संसार की धन-सम्पदा, पैसा- आदि कुछ भी साथ लेकर नहीं आता। किन्तु यह एक कडवा सच है। इसके साथ ही उसे मृत्यु के समय संसार के अधिकाधिक प्रिय पदार्थ उदा.सोना, चांदी, धन-सम्पदा, घर-द्वार, जमीन जायदाद आदि में से कुछ भी ले जाने नहीं पाता। यही अध्यादेश है। इसका सभी को पालन करना ही पडता है। वह क्षमाशील नहीं है। यहां कोई भी पक्षपात या सिफारिश नहीं चलती।

आज या युग 'अर्थप्रधान युग' है। मानव सदैव-पैसा करता रहता है। किन्तु उसमें से एक भी पैसा वह साथ नहीं ले जाता। यह मानव आज भूल गया है जिन्हें वह अपना और प्रिय मानता है, वे भाई, बहन, माता-पिता, पत्नी, पुत्र, पुत्रियां, दामाद आदि में भी कोई भी उसके साथ नहीं आता। हमें अकेले ही जाना पडता है। आते समय कोई साथ नहीं आया और जाते समय भी कोई साथ नहीं जाता। ऐसी परमात्मा की विचित्र लीला है। फिर जो साथ नहीं आता, उसके लिए ये अनथक प्रयास क्यों? और किसलिए? यह एक गहन प्रश्न है। जिसके ध्यान में यह रहस्य आता है, वह तो जाता है और जिसके ध्यान में नहीं आता, वह मोह में फंसकर तथा सब कुछ अपना समझकर उसे छोडना नहीं चाहता। उन्हें माया-मोह ने जकडा होता है, किन्तु परमात्मा किसी की भी सुनता नहीं है। समय आने पर धक्का देकर बलपूर्वक छुडवाता है। उस समय आत्मा को दुःख प्राप्त होता है। लेकिन जो यह जानता है कि हमारे साथ कुद भी जानेवाला नहीं होता है। लेकिन जो यह जानता है कि हमारे साथ कुछ भी जानेवाला नहीं है और एक दिन सब कुछ छोडकर जाना है, तब वह मोहान्ध नहीं होता। उसे जाते हुए दुःख नहीं होता। वह हंसते-हंसते जाता है अर्थात् मृत्यु के समय भी 'सुख या दुःख'? यह समझना ही ज्ञान, वैराग्य आदि प्रवृत्तियों पर निर्भर है। इससे हम आनन्दपुर्वक शरीर का त्याग कर सकते हैं और सुख से निकल जाता सकते हैं। आत्महत्या करके नहीं।

''इस संसार के दृश्य पदार्थ साथ

लाना नहीं और ले जाना भी नहीं।'' यह सैनिकी कानून सभी की समझ में आया है। किन्तु अदृश्य Something में बीज के रुप में कुछ अदृश्य बातें स्थित होती हैं। पूर्व प्रतिपादित रीति से यह सब Block Box जैसा है। इसमें जीवन के सारे कार्यों का प्रवृत्तियों का, ज्ञान का और अनुभवों का मुद्रण (Recording) होता रहता है।

हम जन्म लेते समय पूर्वजन्म के कुछ अनुभव ज्ञान गुण और प्रवृत्तियां लेकर आते हैं। इस कारण ठीक ठाक माता-पिता जैसी सन्तानें उत्पन्न नहीं होतीं। कुम्हार के घर सन्त गोरोबा, माली के घर सन्त सावता, वैसे ही सन्त ज्ञानेश्वर जैसे महान् दार्शनिक, जो अल्पायु में ही इतना महान् दर्शन जान सके तथा संसार को सिखा सके! यह उसी का द्योतक है। कुछ बालक बचपन में ही गणित जैसे कठिन विषय में या तबलावादन, गायन आदि कलाओं में निपुण(माहिर) होते हैं कि कुछ बालकों को तो बिना सिखाए ही यह सब अवगत होता है। वे जल्द ही सब से आगे रहते हैं।

उपर्युक्त प्रमाणों से स्पष्ट है कि गुण, ज्ञान, अनुभव, प्रवृत्तियां आदि अच्छे संस्कार साथ लाये जो सकते हैं और साथ ले जाए भी सकते हैं। कुछ लोगों को तो पिछले जन्म की बातें याद आती हैं। प्रवृत्ति (नीयत) भी जन्म-जन्मान्तर में बनती है और बिगडती भी है। किन्तु वह बनाने की और बिगाडने की जिम्मेदारी तो अपनी अर्थात् आत्मा की होती है।

मानव जो कुछ साथ लेकर आता है, उसका उपयोग इस जन्म में होता है। यश और कीर्ति उसी के आधार पर प्राप्त होती है। अर्थात् वह पूंजी है। जिसके माध्यम से वह इस जीवन के सारे व्यवहार कर सकता है। इसी प्रकार हमारे अगले जन्म के लिए हमारा बँक बैलेन्स क्या हो? इसका भी विचार कर सकतें हैं। और उसके लिए प्रयास कर सकते हैं।

इसलिए ज्ञान-प्राप्ति, सत्सङ्गति, साधना, तप, धर्माचरण, सत्प्रवृत्ति इन सभी का जीवन मे आचरण करना, यह प्रत्येक का कर्तव्य होता है और जो यह कर नहीं सकता उसे तो दुःख ही भुगतना पडताहै। इसीलिए 'पुनर्जन्म' भी निश्चित है। भौतिक संसार का कोई भी पदार्थ साथ ले जाने और ले ओन नहीं आता। केवल सूक्ष्म शरीर में जो कुछ संस्कार रेकॉर्ड किये होते हैं, वे ही ले जाने और आने आते हैं और यही हमारे जीवन की सच्ची पूंजी है। अत: उस पूंजी के लिए हर व्यक्ति को जागरूक रहना चाहिए। सुख प्राप्ति करने का यह मूल मार्ग है। किन्तु दुर्भाग्यवश आज सारा संसार विपरीत दिशा में चल रहा है तो फिर उन्हें सुख क्योंकर प्राप्त होगा?

– आर्य समाज, परळी-वै.

हास्यकाव्यम्

प्रजासत्ताकदिवसावसरे...

गणतन्त्रपतीन् नमामि

– डॉ.प्रशस्यमित्र शास्त्री

येषां निमेषनियतेन महार्घतायाम्,
स्यात् प्रोन्नतिश्च सहसाऽवनतिर्भवेद् वा ।
त्यक्त्वा त्वहं गणपतिं भगवन्तम् अद्य,
तान् वै नमामि गणतन्त्रपतीन् स्वदेशे।।१।।

येषां वरेण्य-गणतन्त्र-सुरक्षकाणाम्,
भ्रू-भङ्गिभिः परिचितास्त्वपराधिनस्ते।
शान्ता भवन्ति सहसा त्वथवा सचेष्टाः,
तान् वै नमामि गणतन्त्रपतीन् स्वदेशे।।२।।

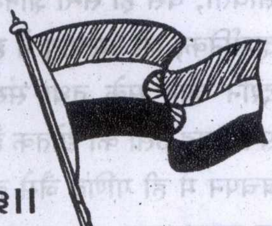

कृष्णं धनं गणयितुं बहु तत्परा ये,
निर्वाचनेषु निरता गणिते मतानाम्।
सिद्धाश्च जातिगणनासु विलक्षणासु,
तान् वै नमामि गणतन्त्रपतीन् स्वदेशे।।३।।

मूर्खं सदा जनगणं बहुमन्यमानाः,
स्वार्थे सदैव निरता जनतामुपेक्ष्य।
संसत्सु चाऽपि गणयन्ति निजं सुखं ये,
तान् वै नमामि गणतन्त्रपतीन् स्वदेशे।।४।।

श्रीकृष्णमेव भुवि पूजयसे कथम् भो?
कृष्णं धनं यदि ददाति तवाऽत्र सिद्धिम्।
कृष्णं विहाय भुवि कृष्ण-धने यतस्व,
यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः''?।।५।।

* * *

काव्यार्थ

गणतन्त्ररक्षकों को प्रणाम

जिनके एक इशारे से ऊपर या नीचे होता है,
मँहगाई का ग्राफ निरन्तर चढता और उतरता है।
गणपति को त्यजकर इनको ही सदा नमन हम करते हैं,
भारत के गणतन्त्र मालिकों का अभिनन्दन करते हैं।।१।।

इनकी भृकुटी के छोटे से देखा एक इशारे से,
भली भाँति हम जान रहे हैं परिचित अपराधी सारे।
चुप रहते या कुछ भी करने को तत्पर हो जाते हैं,
इसीलिए श्रद्धा से इनको सदा नमन हम करते हैं।।२।।

काला धन गिनने को बैठे सदा देश में ये तत्पर,
निवार्चन में भी वोटों की गणना का आँके अन्तर।
सभी जातियों के वोटों की गणनाएँ जो रखते हैं,
इन गणतन्त्र मालिकों का ही सदा नमन हम करते हैं।।३।।

जन-गण को ये महामूर्ख ही मन ही मन जो मान रहे,
उन्हें अपेक्षित कर अपना ही स्वार्थ सदा पहचान रहे।
संसद में भी अपनी ही सुविधाओं की गिनती करते,
इन गणतन्त्र मालिकों को अब नित्य नमन हैं हम करते।।४।।

भारत में भगवान कृष्ण को पूज रहे बेकार यहाँ,
काले धन से सिद्ध हो रहा काम सभी सर्वत्र जहाँ।
छोड कृष्ण को कृष्ण-वित्त कैसे बनता है यह सीखो,
बना सको यदि नहीं यहाँ तो दोष कहाँ कैसे?देखो।।५।।

(कवि राष्ट्रीय साहित्य अकादमी एवं राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त
आर्य जगत् के इस समय के एकमात्र संस्कृत कवि हैं)

- बी-२९, आनन्दनगर, रायबरेली(उ.प्र.) मो.9451074123

अभिनंदन समाचार

प्रा. अखिलेश शर्मा को पीएच. डी. उपाधि

वैदिक विद्वान प्रा.श्री अखिलेशजी शर्मा को हाल ही में औरंगाबाद स्थित डॉ.बाबासाहब अम्बेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय ने पीएच.डी. उपाधि प्रदान की है। श्री शर्माजी ने इसी विश्वविद्यालय की संस्कृतविभागाध्यक्षा डॉ.कान्ति व्यवहारे के निर्देशन में **'डॉ.हरिश्चन्द्र रेणापुरकर के साहित्य का परिशीलन'** इस विषयपर शोधप्रबन्ध प्रस्तुत किया था। उन्होंने लगभग ५ वर्ष तक संबंधित विषय पर शोधकार्य किया, जिसमें डॉ.रेणापुरकरजी विरचित विभिन्न संस्कृत काव्यग्रन्थों का गहराई से चिन्तन कर उनकी लेखनशैली के विभिन्न पहलुओं पर मौलिक रूप से प्रकाश डाला है। ज्ञातव्य है कि दिवंगत श्री रेणापुरकरजी संस्कृत साहित्य के राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त विख्यात कवि रहें हैं। तीन राज्यों ने उन्हें संस्कृत साहित्य अकादमी पुरस्कारों से भी गौरवान्वित किया था।

डॉ.श्री शर्माजी ने लातूर स्थित राजर्षि शाहू महाविद्यालय में संस्कृत प्राध्यापक के रूप में १५ वर्ष कार्य किया है। सम्प्रति वे धुलिया के एस.एस.व्ही.पी.एस. महाविद्यालय में संस्कृत विभाग प्रमुख के रूप में कार्यरत हैं।

एड. चौहान को 'युवा कार्यकर्त्ता' पुरस्कार

प्रान्तीय सभा के अन्तर्जातीय विवाह विभाग प्रमुख तथा आर्यसमाज सम्भाजीनगर (औ.बाद) के कोषाध्यक्ष एड.श्री जोगेन्द्रसिंहजी चौहान द्वारा किये गये उल्लेखनीय सामाजिक तथा धार्मिक कार्यों को ध्यान में रखते हुए उन्हें सकल मारवाडी युवा मंच महाराष्ट्र इस संगठन द्वारा दि.१३ जनवरी को **'युवा गौरव'** पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया।

श्री चौहानजीने आर्य समाज के माध्यम से आजतक लगभग पाचसौं से भी अधिक अन्तर्जातीय लगवाये हैं। साथ ही सम्भाजीनगर में आर्य समाज की गतिविधियों को बढाने में वे अग्रणी रहते हैं। प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के विविध उपक्रमों को यशस्वी करने में उनका सदैव सहयोग बना रहता है। एक उत्साही आर्य कार्यकर्त्ता होने के साथ ही वे प्रसिद्ध विधिज्ञ के रूप में भी वे जाने जाते हैं।

उपरोक्त दोनों आर्य महानुभावों का महाराष्ट्र आर्य प्र.सभा एवं राज्य की सभी आर्य समाजों द्वारा हार्दिक अभिनंदन!

।।ओ३म्।।

माझा मराठाची बोलु कवतिके । परि अमृततेही पैजेसीं जींके ।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ।। (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

उपनिषद संदेश — ईश्वर सर्वत्र एकसारखाच...

यद् एवेह तद् अमुत्र यद् अमुत्र तदन्विह।
मृत्योः स मृत्युमाप्नोति य इह नानेव पश्यति।।

जो ब्रह्म(परमेश्वर) इहलोकात आहे, तोच परलोकात(अथवा विविध जन्मांतरात) देखील सर्वांचा धारक, पालक, प्रकाशक तसेच नियंत्रक सुद्धा आहे. आणि जो ब्रह्म(परमेश्वर) परलोकांमध्ये आहे, तोच इहलोकात देखील सारखाच आहे. जो माणूस परमेश्वरासंबंधी अनेकत्व(वेगळेपण) पाहतो, तो अज्ञानी असल्या कारणाने मृत्युकडून पुन्हा मृत्युकडे धाव घेतो, म्हणजेच पुन्हा-पुन्हा जन्म-मृत्यूच्या चक्रात अडकून मोठ्या दुःखाला प्राप्त होतो. (कठोपनिषद)

दयानंद वाणी — सोवळे-ओवळे चुकीचे...!

एक मर्यादा आपण अवश्य काटेकोरपणे पाळली पाहिजे. ती अशी की कोणत्याही परिस्थितीत चुकूनही मद्यमांसाचे सेवन करता कामा नये. राजपुरुषांच्या युद्धांच्या वेळीही सोवळ्याओवळ्याचा विचार करून स्वतःचा स्वयंपाक स्वतःच करून खाण्याने नक्कीच पराभव होतो, ही गोष्ट सर्व बुद्धिमंतांनी सांगून ठेवलेली नाही काय ? वस्तुतः क्षत्रियांनी युद्धाच्या वेळी एका हाताने भाकरी खात व पाणी पीत तर दुसऱ्या हाताने शत्रूवर चढाई करणे आणि घोड्यावर किंवा हत्तीवर बसून अथवा पायउतारे होऊन कापाकापी करीत विजयी होणे हाच त्यांचा आचार व पराजित होणे हा अनाचार होय. सोवळ्या ओवळ्याच्या व शिवाशिवीच्या मूर्ख कल्पनांमुळे येथील लोक विरोध करण्याच्या वेळी जेवण्या-खाण्याचे सोवळे सांभाळण्याची स्वातंत्र्य, आनंद, धन, राज्य, विद्या व पुरुषार्थ यांना पारखे झाले आणि सोवळे-ओवळे करीत डोक्याला हात लावून बसले आहेत. कांही पदार्थ मिळाले, तर ते शिजवून खावेत, अशी इच्छा ते उराशी बाळगून आहेत. परंतु असे स्वस्थ बसून थोडेच काही मिळते? अशा प्रकारच्या या सोवळ्या-ओवळ्याने आर्यावर्त्ताचा सर्वनाश केला आहे.

(सत्यार्थप्रकाश-१०वा समुल्लास)

मूल्यशिक्षणाच्या दृष्टीने

म.दयानंदांच्या विचार व कार्याचे महत्त्व

– राजलक्ष्मी देशपांडे

'स्वामी दयानंद सरस्वती' हे भारतीय संस्कृतीमधील दशनाम संन्यास परंपरेतील नाव ! स्वामीजींनी वेदांचा सखोल अभ्यास केला होता आणि वेदांखेरीज अन्य कोणताही ग्रंथ त्यांनी कधीही प्रमाण मानला नाही. अपवाद फक्त मनुस्मृतीचा! आपल्या विचारांच्या पुष्टीकरणासाठी त्यांनी मनुस्मृतीचा आधार घेतला. मात्र समाजाला प्रतिगामी करणारे, अंधश्रद्धा जोपासणारे आणि माणसांवर अन्याय करणारे असे श्लोक मुळात मनुस्मृतीत नव्हेतच, आपल्या स्वार्थासाठी ते कुणीतरी रचून मनूच्या नावावर लिहिले, असे ते ठामपणे सांगत. दयानंदांच्या विचारांचं व कार्याचं मूल्यमापन आपण त्यांचा काळ लक्षात घेतल्याखेरीज करू शकणार नाही.

१८२४ ते १८८३ हा दयानंदांचा काळ. या काळातील सामाजिक, राजकीय, धार्मिक परिस्थिती सर्वांना माहीत असते हे गृहीत धरून विषयविस्तार टाळण्यासाठी मी त्याचे पुन्हा वर्णन करीत नाही.

आता दयानंदांच्या विचारातून आणि आचारातून दिसून येणाऱ्या मूल्यांचा विचार करू! अन्नपदार्थ बनवतांना किंवा एरवीही सोवळ्याचा किंवा जातीचा विचार न करता स्वच्छतेचा करावा हे ते सांगत. त्यांचे जीवनचरित्र माहीत असणाऱ्यांना त्यांनी आपल्या विचारातून स्वावलंबन, कर्तव्यदक्षता, श्रमनिष्ठा, ज्ञाननिष्ठा, शुचिता, भूतदया, निर्भयता,समता, बंधुभाव, न्यायप्रियता, सहिष्णुता, आदरभाव, सत्यप्रियता, अहिंसा, प्रेम, निसर्गप्रेम आणि सहकार्य तसेच राष्ट्रप्रेम आणि राष्ट्रीय एकात्मता याचं दर्शन घडवलं होतं, हे नव्यानं सांगण्याची गरज नाही. या प्रत्येक मूल्याबद्दल बोलणं हे वेळेच्या मर्यादेमुळं शक्य नाही. परंतु कांही मूल्ये जी त्यांनी ठळकपणे सतत सांगितली, किंबहुना त्यांचा प्रसार हे त्यांचं जीवनकार्य होतं, त्या मूल्यांचा आपण विचार करू.

१) **पर्यावरण रक्षण** – मूर्तिपूजेऐवजी निराकार ईश्वराचे ध्यान, यज्ञ(हवन) हा उपासनेचा मार्ग म्हणून दयानंदांनी सांगितला. वातावरण शुद्ध करण्याची जबाबदारी प्रत्येक व्यक्तीची आहे. यज्ञामुळे वातावरण शुद्ध होते. त्यातील तुप, सामग्री व समिधांचा सुगंध औषधी असतो. त्या वाळलेल्या फांद्या गोळा करून मिळवतात, झाडे तोडून नव्हे. हा दयानंदांचा दृष्टिकोन

होता. (सत्यार्थप्रकाशातील तृतीय समुल्लास-संध्याग्निहोत्राचा उपदेश, होमाचे फळ हा परिच्छेद) आजच्या अभ्यासक्रमात निसर्गप्रेम हे मूल्य दिले आहे. परंतु एकूणच पर्यावरणाचा-त्यात हवा, पाणी, ध्वनिलहरी यांचा-विचार करण्याची वेळ आली आहे. आपण पर्यावरण खराब करतो. म्हणून आपणच ते स्वच्छ ठेवले पाहिजे हा विचार मुलांना सांगायला हवा.

२) **स्त्री-पुरुष समानता** - आपल्या विचारातून स्त्री-पुरुष समानतेचा प्रसार दयानंदांनी सतत केलाच, पण आचरणातूनही केला. त्या काळाच्या दृष्टीनं स्त्री-त्यातही विधवा म्हणजे दलितांहून दलित होती. पण दयानंदांनी तिला गायत्रीमंत्राचा उपदेश केला. सर्व स्त्रियांना वेदांचा, धर्मकृत्यांचा आणि पौरोहित्याचा अधिकार दिला. आर्य समाजाच्या प्रसारक स्त्रिया होत्या. माई भगवतीचं कार्य या क्षेत्रात उल्लेखनीय आहे. दयानंदांनी मुलींसाठी शाळा काढल्याच, परंतु मुलांसाठीही शिक्षण सक्तीचं असावं असे विचार मांडले. मुलींच्या लग्नाचं वय सोळा ते चोवीसपर्यंत वाढवलं. ज्या काळात ते आठ किंवा त्याहून कमी होतं. स्वयंवर पद्धतीचा पुरस्कार करून जीवनसाथी निवडण्याचा अधिकार मुलींना दिला. मूल्यशिक्षणाच्या अभ्यासक्रमात ५वी ते ७वी च्या शिक्षकांसाठी असलेल्या हस्तपुस्तिकेत मूल्यांच्या सूचीमध्ये हे मूल्य स्वतंत्रपणे दिसत नाही. पण विद्यार्थ्यांसाठीच्या हस्तपुस्तिकेत नाट्यछटा किंवा इतर संवादातून ते रुजवण्याचा प्रयत्न केला आहे. समता या मूल्यातही हे अनुस्यूत असावं, परंतु या मूल्याचा खरा परिणाम मुलांवर होतो, तो कुटुंब समाज, प्रसारमाध्यमे यामधून ! प्रसार-माध्यमापेक्षा अधिक परिणाम कुटुंबातील व्यक्तींच्या परस्पर वर्तणुकीचा मुलांवर होतो.

आजही ७०% पुरुष आपल्या बायकोला मारतात असं दिसून आल्याचं 'सकाळ' या वृत्तपत्राच्या अग्रलेखात म्हटलं होतं. या पार्श्वभूमीवर दयानंदांनी सांगितलेली पंचायतन पूजा आठवते. परमेश्वर, गुरू, माता-पिता आणि पत्नीसाठी पती आणि पतीसाठी पत्नी पूजनीय आहे. 'पत्नीव्रतधारी पुरुष' ही संज्ञा दयानंदांनी निर्माण केली. (सत्यार्थप्रकाश एकदाश समुल्लास पंचायतन पूजा समीक्षा) दैनंदिन व्यवहारात सकाळी किंवा रात्री प्रथम भेट होईल तेंव्हा पती-पत्नींनी परस्परांना 'नमस्ते' असे प्रेमाने म्हणावे असेही ते म्हणत. (सत्यार्थ प्रकाश-चतुर्थ समुल्लास-विवाहाची लक्षणे) यावरुन वाटतं- पत्नीबद्दलचं प्रेम 'मनात असतंच की' असं न म्हणता त्याची अभिव्यक्ती करावी असं सांगणारे दयानंद पहिलेच असावेत. हे मूल्य कौटुंबिक

पातळीवर रुजलं, तरच समाजात आणि त्यातून मुलांमध्ये उतरेल. यासाठी जागृती निर्माण करण्याचं काम प्रसारमाध्यमे करू शकतील. मुलीचं शिक्षण आणि विवाहाचं वय याबाबत कायदे आणि जागृती दोन्ही ही पूर्वीपेक्षा खूप प्रमाणात झाली आहे. तरीही ती अधिक व्यापक आणि अधिक खोलवर रूजण्याची गरज आहे.

३) **संयम** – विद्यार्थीजीवनात अत्यंत आवश्यक म्हणून दयानंदांनी सांगितलेलं हे मूल्य मूल्यशिक्षणात आलं नाही. दयानंदांनी याला ब्रह्मचर्य हा शब्द वापरला. खरं तर या शब्दाचा जो अत्यंत संकुचित अर्थ घेतला जातो. त्याहून फार मोठा अर्थ यात आहे. पंचेंद्रियांद्वारे आपण आपली ऊर्जा खर्च करीत असतो. पाहण्याच्या अतिरेकातून डोळ्याची, ऐकण्याच्या अतिरेकातून कानांची, बोलण्याच्या अतिरेकातून वाणीची, भरकटणाऱ्या विचारातून मनाची शक्ती खर्च होते. पौगंडावस्थेत लैंगिक शिक्षणाच्या अभावामुळे किंवा कधी-कधी अविचारानं, घरातील संवादाच्या अभावातून ही ऊर्जा विविध प्रकारे खर्च केली जाते. या सर्व इंद्रियांच्या एकत्रित संयमाला ब्रह्मचर्य म्हणतात. याचं महत्त्व आपल्या विचारांतून दयानंदांनी वारंवार मांडलं होतं. त्यांच्या चरित्रात इंद्रियनिग्रहामुळे त्यांना प्राप्त झालेल्या अतुलनीय सामर्थ्याचं दर्शन घडतं. मुलांपर्यंत हा विचार पोचणं महत्त्वाचं आहे.

अधून-मधून डोळे मिटून घेणं, निरर्थक दृश्यं उगाचच सवयीनं पाहात न बसणं (विशेषत: टी.व्ही.वरील), कांहीही न ऐकता शांत राहणं, काही वेळ मौन राहाणं, एकाग्रतेचा अभ्यास करून मनाला भरकटू न देणं, लैंगिक आकर्षणांवर, भावनांवर दुसरे चांगले छंद लावून मनाचा वचक ठेवणं हे साधे प्रयोग त्यासाठी सांगता येतील. एक महत्त्वाची गोष्ट म्हणजे यात दमन नव्हे, संयमन आणि ऊर्जेचं योग्य नियमन अभिप्रेत आहे. विविध शाळांमध्ये कांही जागरूक शिक्षक असे किंवा अशा तऱ्हेचे प्रयोग करत असतात. परंतु याबद्दलची जागृती खूप कमी आहे. व्यक्तिमत्त्व विकासासाठी किंवा एकूणच शरीर-मनाच्या आरोग्यासाठी असणारं हे मूल्य त्याच्या 'ब्रह्मचर्य' या विवादास्पद शब्दामुळे दुर्लक्षित होऊ नये.

४) **समता** – आजच्या मूल्यशिक्षणात असलेल्या 'समता' या मूल्याचा दयानंदांनी जीवनभर पुरस्कार केला आहे. जातिभेद, पंथभेद यांना त्यांचा तीव्र विरोध होता. हिंदू धर्माप्रमाणेच मुस्लिम आणि ख्रिश्चन धर्मांवर त्यांनी कडाडून टीका केली. जबरदस्तीनं धर्मांतरित झालेल्याचं शुद्धीकरण केलं, मात्र माणसां-माणसांत केवळ धर्मावरून फरक केला नाही. परिस्थितीचा रेटा, कायदा आणि सामाजिक जागृती

यामुळे हे मूल्य हळूहळू रुजत आहे. परंतु अजूनही लोकांच्या मनातून हे भेद पूर्णपणे गेले नाहीत. जातिभेद, पंथ(धर्म)भेद पाळणं ही मुख्यत: धार्मिक बाब असते. धर्माला विरोध करून नवा विचार मांडला, तर तो लोकांच्या सहज पचनी पडत नाही. म्हणून मुळातच आर्यधर्मात जातिभेद नाही. खुद्द मनुस्मृतीतही तो मुळात नाही. त्यामुळे हा भेद न पाळल्यानेच धर्मानुसार वर्तन होणार नाही. हा दयानंदांचा विचार जातिभेद दूर करण्यास उपयुक्त ठरेल. शेकडो वर्षे यासाठी केलेले प्रयत्न अजून पुरेसे ठरत नाहीत, यामुळे निदान दयानंदांच्या विचारांच्या साहाय्याने जातिद्वेष तरी जावा असं म्हणावसं वाटतं.

५) मूर्ती/विभूतिपूजेला प्रखर विरोध-

मूर्तिपूजेच्या अवडंबरामुळे दयानंदांनी तिला विरोध केला. मात्र त्यातून प्रेरणा घेऊन लोक घरोघरीच्या मूर्ती विसर्जित करू लागले. तेंव्हा त्यांनी 'मूर्तिपूजारहस्य' या विषयावर भाषण केलं. त्यात ते म्हणाले – 'घरात मूर्ती असायला हरकत नाही. पण फक्त गंध फूल वाहण्यात धन्यता मानू नये. त्यांचे गुण आपल्यात आणण्याचा प्रयत्न करावा.' रामपूजकानं सत्यवचनी असलं पाहिजे, हनुमंतांच्या उपासकानं बलप्राप्तीचे प्रयत्न केले पहिजेत. गांधीचं नांव घेणाऱ्यांची राहणी साधी, विचारसरणी उच्च असावी, आंबेडकरांचे अनुयायी ज्ञाननिष्ठ हवेत. थोडक्यात मूर्तिपूजेची परिणती त्या-त्या देवतेचे, व्यक्तीचे गुण स्वत:मध्ये येण्यात व्हायला हवी. आज समाजात हे दिसत नाही. मंदिरांपुढे तरुणांच्या रांगा असतात, देवांचे उत्सव, सण, जयंत्या-पुण्यतिथ्या यांच्या निमित्तानं फक्त उत्सव होतात. स्वत:चा/समाजाचा विकास या स्मरणाच्या निमित्तानं व्हावा यासाठी काय करता येईल हा विचार व्हायला हवा. थोडं आत्मपरीक्षण करून स्वत:मधले दोष शोधणं, ते दूर करण्यासाठी व सद्गुणसंपादनासाठी जागरूक राहणं त्यासाठी दैनंदिनी लिहिण्यासारखे उपक्रम मुलांना देता येतील. मूर्तिपूजा अमान्य केल्यानंतर हवन, संध्या, गायत्रीजप इ. कर्मे दयानंदांनी पोकळी निर्माण होऊ नये म्हणून सांगितलीच. कोणत्याही कर्मातील ओलावा निघून गेला, की ते कर्मकांड होते. ते कर्म धार्मिकच असेल असे नाही. कर्म करणारी व्यक्ती जोपर्यंत भावविभोर आहे, तोपर्यंत तिच्या कृतीला कर्मकांड मानलं जाऊ नये. प्रत्येकाच्या दृष्टीनं 'कर्मकांड' वेगवेगळं असू शकतं. तेंव्हा धार्मिक/सामाजिक रीतिरिवाजामागचा भाव शोधणं, तो गवसला व पटला तर निर्भयतेने ते स्वीकारणं आणि भाव गवसला नाही तर ते नाकारणं याचा विवेक समाजात रूजला पाहिजे. तर दयानंदांचा विचार समाजात रूजला असं होईल.

६) राष्ट्रभक्ती – 'सर्व सुखसोयींनी युक्त अशा परकीय राजवटीपेक्षा अनेक उणीवा असलेले स्वराज्य जास्त चांगलं आहे.' हे दयानंदांनी ब्रिटीश अधिकारी 'नॉर्थ ब्रूक' यांना दिलेलं उत्तर प्रसिद्ध आहे. राष्ट्रभक्ती या मूल्याशिवाय राष्ट्र जगूच शकणार नाही. त्यामुळं मूल्यशिक्षणात हे अर्थातच महत्त्वाचं मूल्य आहे. राष्ट्राच्या अस्मितेकरीता त्याला स्वत:ची भाषा असली पाहिजे, या भूमिकेतून दयानंदांनी हिंदी ही राष्ट्रभाषा मानली. पुढे हिंदी राष्ट्रभाषा व्हावी, यासाठी शासकीय व सामाजिक पातळीवर आर्यसमाजानं खूप प्रयत्न केले. भाषा ही संस्कृतीचं प्रतिनिधीत्व करीत असल्याने भाषा मेली, तर राष्ट्र मरते. भाषा जिवंत ठेवण्याचे प्रयत्न अनेक पातळ्यांवर व्हायला हवेत. ही जबाबदारी फक्त मूल्यशिक्षणांवर टाकून चालणार नाही. आपल्याच देशात इंग्रजीशिवाय अडतं पण मातृभाषा आणि राष्ट्रभाषेविना अडत नाही, ही परिस्थिती राहिली तर मरणाऱ्या भाषेबरोबर संस्कृती आणि राष्ट्र हळूहळू संपत जाईल.

७) विज्ञाननिष्ठा – विज्ञाननिष्ठा हे मूल्य आपण शिक्षणात आणलं. हे दयानंदामध्ये प्रखरतेनं होतं. योगशास्त्रात वर्णन केलेल्या नाड्या व चक्रे प्रत्यक्षात दिसतात का हे पाहण्यासाठी गंगेत वाहत आलेलं शव घेऊन त्यांनी फाडलं होतं आणि त्यांचा अभ्यास केला होता. त्यानंतर विरजानंदांसारख्या अत्यंत तापट गुरुंची सेवा निष्ठेनं केवळ ज्ञानप्राप्तीकरता केली होती. दिवसेंदिवस शिक्षणातून हे मूल्य हरवत आहे. ज्ञानापेक्षा मार्क्स महत्वाचे ठरत आहेत. त्यातून स्पर्धा आणि शिक्षणाचं बाजारीकरण निर्माण होत आहे. अत्यंत 'ढ' विद्यार्थी म्हणून चौथीतूनच शाळेतून हाकललेला न्यूटन भौतिकशास्त्राचं अत्युच्च ज्ञान घेऊन देऊ शकतो. असं वातावरण शिक्षक आणि शिक्षणसंस्था यांनी निर्माण केलं, तरच ज्ञाननिष्ठ हे मूल्य जपता येईल.

८) सामाजिक बांधिलकी – हा शब्द सध्याच्या काळात घासून गुळगुळीत झाला आहे. दयानंदांनीही अगदी हाच शब्द वापरला नव्हता. मात्र वानप्रस्थाश्रमीयांनी उर्वरित आयुष्य व संन्याशांनीही आपलं आयुष्य समाजासाठी द्यावंच, पण गृहस्थाश्रमीयांनीही दिवसाकाळी तासभर वेळ सामाजिक कामांकरता द्यावा असे ते म्हणत. आज समाजसेवा / NSS या विषयांतर्गत हे मूल्य रुजवण्याचा प्रयत्न होतो. परंतु सन्माननीय अपवाद वगळता शाळेच्या आवारातील गवत काढणे या पलीकडे समाजसेवा पोचत नाही. खरं म्हणजे वृद्धाश्रम, अनाथाश्रम, दवाखाने यांना भेटी देणं, आपल्या आसपासच्या सामाजिक समस्यांची माहिती करून घेणं असं कांही या तासाला करता येईल.

हा सर्व आढावा घेतल्यानंतर असं लक्षात येत की, आर्यसमाजाचं अस्तित्व थोडं प्रभावहीन झालं असलं आणि दयानंदही इतिहासाच्या पडद्यामागे गेले असले, तरी त्यांच्या विचारांमुळे समाजाला जी गती मिळाली, तिचा प्रभाव मानावाच लागेल. गोपाळ हरि देशमुख म्हणजे लोकहितवादी, म.फुले, शाहू महाराज यांच्यावर दयानंदांच्या विचारांचा प्रभाव होता. न्या.रानडे प्रार्थना समाजाचे असले, तरी त्यांच्याही मनात दयानंदांबद्दल आदर होता. शाहू महाराज आणि डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांचे घनिष्ट संबंध असल्यामुळे डॉ.आंबेडकरांच्या विचारांवरही दयानंदाचा थोडा फार संस्कार होताच.

कोल्हापुरातील सर्व शिक्षणसंस्था या आर्यसमाजाला चालवण्यासाठी दिल्या होत्या. त्यामुळे शिक्षणाचं एक वेगळंच वातावरण त्या काळी निर्माण झालं होतं. या वातावरणाचा परिणाम इतरही शिक्षणसंस्थांवर होत होता. कोल्हापूर जवळील हरिहर विद्यालयाचं उदाहरण त्यासाठी देता येईल. या शाळेत शाळा भरतानाच मुख्याध्यापक राखुंडी, पाण्याची बादली आणि तांब्या घेऊन उभे राहात. मुले आल्यानंतर त्यांच्यापैकी कुणी तोंड धुतलं नसेल, तर मुख्याध्यापक ते काम स्वतः करीत. मुलांना दैनंदिनी लिहावी लागे. तिचं नाव होतं – 'देवाशपथ, खरं लिहीन...' डॉ.गोवारीकर हे या शाळेचे विद्यार्थी! पुढे कुलगुरू झाल्यानंतर ते कोल्हापुरला गेले, तेंव्हा सारे सुरक्षारक्षक दूर करून ते आवर्जून शाळेत जाऊन आले.

चंद्रकांत सारखे मराठी सिनेमातील चारित्र्यसंपन्न अभिनेते याच शाळेतले. सिनेसृष्टीत राहूनही व्यसन,मोह यांच्यापासून दूर, नीतिसंपन्न संपन्न असं हे व्यक्तिमत्त्व या शाळेनं घडवलं. यांच्या आत्मचरित्रांचे नाव 'देवाशपथ, खरं लिहीन' हेच आहे. थोडक्यात एकेकाळी जेंव्हा संपूर्ण शिक्षण आर्य समाजाच्या हातात होतं, तेंव्हा चारित्र्यसंपन्न विद्यार्थी त्यांनी तयार केले आणि शैक्षणिक वातावरण तयार केलं ही गोष्ट दयानंदांच्या विचारांचं मूल्य शिक्षणातील महत्त्व सांगण्यास पुरेशी आहे.

एकूण दयानंदांनी सांगितलेली काही मूल्ये समाजात अजूनही पुरेशी उरलेली नाहीत. परंतू त्यांची गरज आहे, म्हणून ती मूल्यशिक्षणात यायला हवीत. काही मूल्ये समाजानं स्वीकारलीच आहेत. दयानंदांच्या काळात त्यांना विरोध असला तरी आता ती सर्वमान्य आहेत. या अर्थाने दयानंदांचे विचार आणि त्यांचं कार्य यांचा मूल्यशिक्षण आणि समाजातील मूल्य या दोन्हींवर प्रभाव आहे.

–११, आम्रपाली अपार्टमेंटस्,बिबवेवाडी,पुणे

(हा शोध लेख २००६ साली लातूरच्या तत्त्वज्ञान परिषदेत सादर झाला आहे.)

आर्य समाज 'एक महायज्ञ'

– लक्ष्मण आर्य (गुरुजी)

माझं गांव डोंगर कपारीत वसलेलं, पण वारकरी सांप्रदायानं भारलेलं. या सांप्रदायाचे गावात वर्षभर कार्यक्रम चालतात. बारा महिने रामायण ग्रंथ चालतो. त्याचा परिणाम म्हणून माझ्यावर तेच संस्कार पडले. पंधरा दिवसांची एकादशी धरणे, लक्ष्मण शक्ती संपेपर्यंत उपवास, संकट चतुर्थी, गणेश चतुर्थी, शिवरात्री इत्यादींचे उपवास करीत असे. तसेच श्रावण महिन्यात रोज देवाला (मूर्तीला) ओल्या पडद्याने पाणी घालणे इत्यादी मी करीत होतो. शालेय शिक्षणानंतर पुढे १९६८ साली परळीच्या वैद्यनाथ महाविद्यालयात प्रवेश घेतला. येथे शिक्षण घेत असतांना एक घोटाळे नावाचा वर्गमित्र लाभला. त्याचे डॉ.काळे सरांशी व पू.हरिश्चंद्र गुरूजांशी शिष्यांचे नाते होते. आम्ही वसतिगृहात राहत असताना पू.गुरुजी अनेक वेळा त्याच्याकडे येत असत. त्यावेळी मुलांना समजून हिताच्या गोष्टी सांगत. त्या गोष्टी आम्हांस मनापासून आवडत. परंतू ही माणसं देवाला(मूर्तीला) मानत नाहीत, म्हणून त्यांच्या सांगण्याकडे मी दुर्लक्ष करीत असे. मित्राने याबद्दल सांगितले की, मी त्याला लाकडे व तुपाचे वाटोळे का करता? असे विचारत असे व चिडवीत असे. त्या मित्राने मला बी.एस्सी. तृतीय वर्षात असताना आर्य समाज मंदिरात येण्याची विनंती केली. त्यामुळे मी एका रविवारी दुपारी आर्य समाज मंदिरात गेलो. तो दिवस शिवरात्रीचा होता. अर्थात मला शिवरात्रीचा उपवास होताच. तेथे सत्संग संपल्यावर मित्राने डॉ.काळे सरांची भेट घालून दिली. मी त्या भेटीमध्ये माझ्या मनामध्ये धर्म म्हणजे काय? देव कसा असतो? तो कसा प्राप्त होतो? यज्ञाचे फलित काय? अशा एक ना अनेक शंका उपस्थित करीत होतो. सर त्यांचे समाधान करीत होते. त्यांची शंका निरसनाची शैली अकाट्य होती. अशी आमची चर्चा सकाळी नऊपासून सायंकाळी चारपर्यंत चालली. सात तासांच्या चर्चेमध्ये माझ्या मनात आर्य समाज व स्वामी दयानंदांबद्दल कमालीचा आदरभाव निर्माण झाला. त्या दिवशी माझ्याबरोबर सरांनाही उपवास घडला. माझ्यासाठी ती शिवरात्र खरी बोधप्रदायिनी ठरली. असा झाला... 'माझा वारकरी पंथ ते आर्य समाज प्रवास!'

आर्य समाजाची आवड निर्माण झाल्याने अनेक ग्रंथांचा स्वाध्याय केला. त्यात प्रामुख्याने सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधी, पुणे प्रवचने, आर्योद्देशरत्नमाला,

आनंद स्वामींचे सर्व ग्रंथ इ. चा समावेश होता. या कार्यात स्व.विनायकरावजी आर्य यांचे मोलाचे सहकार्य लाभले.

बी.एस्सी.झाल्यानंतर १९७२ साली लातूरचे शिबीर केले. त्यात राष्ट्रभक्ती, अंधश्रद्धा निर्मूलन, मानवता धर्म इत्यादींबाबत प्रेरणा मिळाली. त्यामुळे खरा धर्म समजला व खरा वाटणारा पंथ (वारकरी) आपोआप गळून पडला.

आर्य समाजाविषयी चिंतन केल्यास तो 'एक महायज्ञ' असल्याचा प्रत्यय येतो. आर्य समाजाचे संस्थापक स्वामी दयानंदांचे जीवन एक धगधगता ज्ञानाग्नीचा गोळा आहे. मूलशंकर म्हणजे जिज्ञासूंचा प्रतिनिधीं होय. त्यांच्यासारखी दृश्ये अनेकांनी पाहिली असतील, पण जिज्ञासाशून्य माणसावर त्याचा काय परिणाम होणार ? एका छोट्या गोष्टीवरून खऱ्या शिवाचा शोध घेण्याची महत्तम जिज्ञासा ठेवणारे मूलशंकर धन्य होत. अनेक अडथळ्यांना व प्रलोभनांना दूर करीत ते तप:पूत बनले व **'दयानंद'** नाव सार्थक झाले. त्यांना झालेल्या कष्टांचा व संकटांचा विचार केल्यास अंगावर काटा उभा राहतो. महत्प्रयासांती **'स्वामी विरजानन्द गुरुजी भेट'** हा अलभ्य लाभ झाला. त्यांना त्याकाळी अनेक कुप्रथा, परंपरा, अज्ञान, तथाकथित अनेक धर्म यांनी मानवाला ग्रासून टाकलेले दिसले. धर्माच्या नावावर अधर्म, ज्ञानाच्या नावावर अज्ञान खपवलं जातं होतं. हे पाहिल्यानंतर स्वामीजींचे हृदय हेलावले व समाजास ज्ञानाचा प्रकाश द्यायचाच, हे जीवनाचे ध्येय ठरवले. त्यासाठी त्यांनी समाधीसुख एकट्याने उपभोगण्यापेक्षा मानवाला अज्ञानाच्या गर्तेतून काढणे महत्त्वाचे मानले.

त्यांनी अनेक शास्त्रार्थ केले, व्याख्याने दिली. ते प्रत्येक गोष्टीकडे तर्कदृष्टीने व वैज्ञानिक दृष्टिकोनातून पाहत होते. त्यांनी सत्यार्थप्रकाश, संस्कार विधी इ. ग्रंथाच्या रूपाने समाजाला महाधन दिले. त्यांच्या जीवनात अनेक दुर्धर प्रसंग आले, परंतु धैर्याने त्यांचा सामना केला. सत्य सांगत असताना ते राजाला भिले नाहीत, इंग्रज अधिकाऱ्याला घाबरले नाहीत. ते सत्य निर्भीडपणे प्रतिपादन करीत. त्यांच्या सत्संगतीने अमीचंदासारखा विषयलंपट माणूस सुधारला, मुंशीरामसारखा छंदीफंदीचा **'स्वामी श्रद्धानन्द'** झाला.

त्यांनी सत्याचा प्रचार करीत असतांना हा प्रचार सतत चालावा यासाठी 'आर्य समाज' रूपी महान दान समाजाला दिले. आर्य समाजाची स्थापना करण्यामागे त्यांची भावना अतिशय प्रांजळ होती. ते म्हणतात की, **'मला कोणता नवीन पंथ काढायचा नाही, तर वेदांचे ज्ञान प्रतिपादन करायचे आहे.'** धन्य ते दयानंद! किती मोठा तो उदात्त हेतू !

'वेदांकडे चला' हा महान संदेश देणारा एक महान ऋषी म्हणून ते प्रसिद्ध झाले.

आर्य समाजाच्या तत्त्वज्ञानात मानवी जीवनाचे सोने कसे करावे, याची पूर्ण रुपरेखा आहे. बाकीच्या पंथात एकेका तत्त्वाचाच विचार केलेला आहे. कोणी केवळ अंहिसा म्हणतो, तर कोणी सत्यच म्हणतो, परंतु आर्य समाज हा सर्व तत्त्वे मानवी जीवनाला किती आवश्यक व उपकारक आहेत, याचे प्रतिपादन करतो. आर्य समाजात गर्भाधान पासून ते अंत्येष्टीपर्यंतच्या सर्व १६ संस्कारांचे महत्त्व सांगितले जाते. ह्या संस्काराचा वैज्ञानिक दृष्टीने सांगोपांग विचार केला आहे. आर्य समाज मानवसेवा, खरे जीवंतपणीचे श्राद्धतर्पण, पंचमहायज्ञ, राष्ट्रभक्ती, अभ्युदय व नि:श्रेयसप्राप्ती कशी करावी, याचे विवेचन करतो. आर्य समाजाच्या तत्त्वज्ञानाने भारावलेल्या तरुणांनी राष्ट्राच्या स्वातंत्र्यासाठी हसत हसत बलिदान दिले. हैद्राबाद मुक्तिसंग्रामात सिंहाचा वाटा उचलला. आर्य समाज हा समाजाची शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नती करणे, हे ध्येय समजतो. सत्याचा स्वीकार व असत्याचा त्याग करायला शिकवतो. थोडक्यात मानवी जीवनाचं सोनं करण्याची ताकद फक्त आर्य समाजातच आहे. यज्ञ म्हणजे श्रेष्ठ कर्म. परंतु अनेक श्रेष्ठकर्मांची श्रृंखला आर्य समाजातच असल्याने आर्य समाज एक महायज्ञ आहे हेच खरे. त्या महायज्ञात अज्ञान, अंधश्रद्धा, वैरभावना, षड्‌विकार भस्म होऊन **'सुजलाम् सुफलाम्'** पृथ्वीवर मानव खऱ्या अर्थाने 'मानव बनावा' हीच अपेक्षा!

–'पंचप्रकाश'विद्यानगर, परळी–वै.

मो.९४२०२६९९२४

बाबा भांड यांना 'वैदिक अंत्येष्टी संस्कार' ग्रंथ भेट

राज्य साहित्य संस्कृती मंडळाचे अध्यक्ष श्री बाबा भांड यांना आर्य समाजातर्फे नुकताच 'वैदिक अंत्येष्टी संस्कार' हा ग्रंथ भेट करण्यात आला. त्यांच्या कादंबरीवर आधारित 'दशक्रिया' हा मराठी चित्रपट अलीकडे बराच गाजला. यात मृतकाच्या अंत्यसंस्कारानंतर दहाव्या दिवशी केल्या जाणाऱ्या अंधरुढीवर आधारलेल्या दशक्रिया विधीचे खंडन करण्यात आले आहे. या पार्श्वभूमीवर अंत्यविधीचा विशुद्ध वैदिक दृष्टिकोन ज्ञात व्हावा, या उद्देशाने औरंगाबादचे आर्य कार्यकर्ते डॉ.श्री लक्ष्मण माने यांनी श्री भांड यांची भेट घेऊन त्यांना म.दयानंद यांनी रचलेल्या संस्कारविधी अंतर्गत 'वैदिक अंत्येष्टी संस्कार' हा लघुग्रंथ भेट दिला. यावेळी त्यांनी आर्यसमाजाच्या विचार व कार्याचा आपल्यावर प्रभाव असून स्वा.सै.(स्व.) संग्रामसिंह चौहान यांच्याकडून धर्मचिकित्सेची प्रेरणा मिळाल्याचे सांगितले.

टंकारा येथे १२, १३, १४ फेब्रु.ला ऋषी बोधोत्सव

दरवर्षीप्रमाणे याही वर्षी टंकारा (जि.मोरवी-गुजरात) येथे महर्षी दयानंद सरस्वती यांचा जन्मोत्सव व बोधोत्सव विविध विद्वान, संन्यासी, आर्यनेते आदींच्या उपस्थितीत साजरा होत आहे. म.दयानंद स्मारक ट्रस्टतर्फे दि.१२, १३ व १४ फेब्रुवारी २०१८ ला आयोजित करण्यात आलेल्या कार्यक्रमांची सध्या मोठ्या प्रमाणावर तयारी होत असून अनेक आर्यजनांचा सहभाग राहणार आहे.

दि.७ ते १३ फेब्रुवारी दरम्यान आयोजित यजुर्वेद पारायण यज्ञाचे ब्रह्मापद आचार्य रामदेवजी हे भूषवित असून पं.सत्यपालजी पथिक व पं.दिनेश पथिक यांचा भजनोपदेशाचा कार्यक्रम पार पडेल.

डी.ए.वी.चे प्रधान पद्मश्री डॉ.पूनम सुरी हे या समारंभाच्या अध्यक्षस्थानी राहणार असून हिमाचल प्रदेशचे राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रतजी, जे.पी.शूर, महात्मा चैतन्यमुनी आदी यावेळी प्रमुख पाहुणे म्हणून लाभणार आहेत. तरी या कार्यक्रमात सहभागी होण्याचे आवाहन म.दयानंद स्मारक ट्रस्टचे प्रमुख श्री रामनाथजी सहगल यांनी केले आहे.

औरंगाबादेत प्राकृतिक चिकित्सा व स्वास्थ्य रक्षा शिबिर

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेच्या वतीने औरंगाबाद येथील गारखेडा आर्य समाजातर्फे येत्या १० ते १७ फेब्रुवारी २०१८ दरम्यान प्राकृतिक चिकित्सा व स्वास्थ्य रक्षा शिबिराचे आयोजन करणयत आले आहे. औरंगाबादच्या पैठण रोडवरील गिरनार तांड्यामागील ऋषी व्हॅली आंश्रमात होणाऱ्या या शिबिरात सूक्ष्म व्यायाम, योगासन, प्राणायाम या सोबतच प्राकृतिक (निसर्गोपचार) पद्धतीवर आधारित वमन, विरेचन, बस्ती, नौली आदी पंचकर्माद्वारे रोग्याच्या विविध जुनाट आजारांवर तज्ज्ञ चिकित्सकांकडून ईलाज केला जाईल व प्रशिक्षण दिले जाईल.

पहाटे ५ वा. पासून ते रात्रौ ९ वाजेपर्यंतच्या व्यस्त दिनचर्येत शिबिरार्थ्यांना आरोग्यासंदर्भात विविध मौलिक माहिती दिली जाणार आहे. तरी या शिबिरात सहभागी होऊ इच्छिणाऱ्या आरोग्यप्रेमींनी अधिक माहितीसाठी संयोजक डॉ.श्री लक्ष्मण माने यांचेशी ९२२५१११५३ या भ्रमणध्वनी क्रमांकावर संपर्क करावा व या शिबिरात बहुसंख्येने सहभागी व्हावे असे आवाहन प्रधान प्रा.रमेश ठाकुर, मंत्री सौ.अंजू माने, कोषाध्यक्ष-सौ.ज्योती तोष्णीवाल आदींनी केले आहे.

परळीत स्व.बिराजदार वक्तृत्व स्पर्धेला उत्स्फूर्त प्रतिसाद

मुहंमद फरहाल प्रथम, कु.यशश्री द्वितीय तर कु.ऐश्वर्या तृतीय

प्रांतीय सभेतर्फे परळीच्या आर्य समाजात दि.३ डिसेंबर २०१७ रोजी पार पडलेल्या स्व.विठ्ठलराव बिराजदार स्मृती राज्यस्तरीय विद्यालयीन वक्तृत्व स्पर्धेला उत्स्फुर्त प्रतिसाद मिळाला. यात जवळपास १६ विद्यार्थ्यांनी सहभाग नोंदवून उत्कृष्टपणे वक्तृत्व सादर केले.

या स्पर्धेत परळीच्या चिंतामणी फौंडेशन स्कूलचा विद्यार्थी मुहंमद फरहाल मुहंमद जमीर याने प्रथम (रु.१५००), जगमित्र नागा विद्यालयाची विद्यार्थिनी कु.यशश्री संजय पाळवदे हिने द्वितीय(रु.११००), न्यू हायस्कूलच्या कु.ऐश्वर्या महादेव वाघमारे हिने तृतीय (रू.७५१), तर अंबाजोगाईच्या खोलेश्वर विद्यालयाची कु.यशश्री मुकुंद सिरसाठ हिने उत्तेजनार्थ(स्व.तिवार स्मृत्यर्थ रू.५००) हे पुरस्कार मिळविले. विजेत्या स्पर्धकांना पारितोषिके, रोख रक्कम, स्मृतिचिन्ह व वैदिक ग्रंथ संपदा प्रदान करण्यात आली.

या स्पर्धेसाठी **'म.दयानंदांची अध्ययन व अध्यापन पद्धती'** हा विषय ठेवण्यात आला होता. स्पर्धेला परीक्षक म्हणून सर्वश्री ज्ञानकुमार आर्य, लक्ष्मणराव आर्य गुरुजी, भागवतराव आघाव, प्रा.वीरेंद्र शास्त्री यांनी काम पाहिले. अध्यक्षस्थानी रंगनाथ तिवार हे होते, तर प्रमुख पाहुणे म्हणून सोममुनिजी उपस्थित होते. मान्यवरांच्या हस्ते विजेत्यांना पारितोषिकांचे वितरण करण्यात आले.

ज्येष्ठ विचारवंत डॉ.वाघमारे यांचा सत्कार

महर्षी दयानंदांचे अनुयायी, ज्येष्ठ विचारवंत, स्वा.रा.ती.मराठवाडा विद्यापीठाचे संस्थापक कुलगुरु, माजी खा.डॉ.जे.एम.वाघमारे यांच्या ८४ व्या वाढदिवसाचे औचित्य साधून, तसेच त्यांना महाराष्ट्र शासनाचा यशवंतराव चव्हाण लेखन पुरस्कार मिळाल्याबद्दल आणि त्याचबरोबर यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठाणच्या मराठवाडा विभागीय अध्यक्षपदी निवड झाल्याबद्दल त्यांचा महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेच्या वतीने नुकताच सत्कार करण्यात आला.

सभेचे प्रधान डॉ.ब्रह्ममुनिजी, उपप्रधान राजेंद्र दिवे, पुस्तकाध्यक्ष प्रा.ओमप्रकाश होळीकर आदींनी लातूरातील डॉ.वाघमारे सरांच्या घरी जाऊन सदिच्छा भेट घेतली व त्यांचे अभीष्ट चिंतन करून अभिनंदनपूर्वक सत्कार केला आणि त्यांच्या दीर्घायुरारोग्याकरिता शुभेच्छा दिल्या.

शोकवार्ता

हनुमंत जाधव यांना मातृशोक

बिबराळ (ता.शिरुर अनंतपाळ) येथील आर्य समाजाचे धडाडीचे युवा कार्यकर्ते व मंत्री श्री हनुमंतराव भाऊराव जाधव(पाटील) यांच्या सावत्र मातु:श्री सौ.चंद्रभागा भाऊराव जाधव(पाटील) यांचे शनिवार दि.३० डिसेंबर २०१७ रोजी सायं.४.१५ वा. हृदयविकाराने दु:खद निधन झाले. मृत्युसमयी त्या ८५ वर्षे वयाच्या होत्या. त्यांच्यामागे पति, दोन मुले, दोन मुली, सुना व नातवंडे असा परिवार आहे.

सौ.चंद्रभागाबाई अतिशय मनमिळावू, प्रेमळ, सालस, परिश्रमी आणि सुस्वभावी होत्या. घरातील सर्वांवर सुसंस्काराची सावली धरत आपले कुटुंबीय आणि परिसरातील सर्वांशी त्यांनी स्नेहाचे नाते जोडले होते. त्यांच्या पार्थिवावर दुसऱ्या दिवशी प्रा.चंद्रेश्वर शास्त्री यांच्या प्रमुख पौरोहित्याखाली पूर्ण वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. यावेळी पं.अशोक कातपुरे, श्री बभ्रुवाहन शिंदे यांनी सहकार्य केले. वैदिक मंत्रोद्घोषात मोठ्या प्रभावीपणे पार पाडलेल्या हा विशुद्ध अंत्यविधी पाहुन गावकरी खूपच प्रभावित झाले. तिसऱ्या दिवशी लातूरचे पं.ज्ञानकुमारजी आर्य यांच्या पौरोहित्याखाली शांतियज्ञ संपन्न झाला.

प्रा. मदनसुरे यांचे निधन

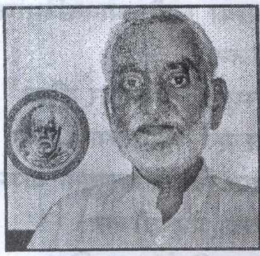

आर्य समाजी संस्कारात वाढलेले प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ते व लातूरच्या रा.शाहू महाविद्यालयाचे निवृत्त संस्कृत विभाग प्रमुख प्रा.ओमप्रकाशजी मदनसुरे यांचे दि.२० डिसेंबर २०१७ रोजी आकस्मिक दु:खद निधन झाले. मृत्यूसमयी ते ६३ वर्षांचे होते. त्यांच्या मागे पत्नी, दोन मुले, सुना, भाऊ असा परिवार आहे.

गरीब व होतकरू विद्यार्थ्यांना सुसंस्कारित करण्याबरोबरच समाजाच्या जडण-घडणीमध्ये दिवंगत प्रा.मदनसुरे यांचे योगदान होते. शाहु महाविद्यालयात संस्कृत विषयाचे संवर्धन, विद्यार्थ्यांचा व्यक्तिमत्त्व विकास साधून त्यांना स्वावलंबी बनविणे, यासोबतच गाडगेबाबांच्या वेशभुषेतून मानवतेचा संदेश देत समाज जागृती करणे या कार्यात ते अग्रेसर होते.

त्यांच्या पार्थिवावर सायंकाळी लातूरात प्रा.चंद्रेश्वर शास्त्री यांच्या पौरोहित्याखाली वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले.

दिवंगत आत्म्यांना भावपूर्ण श्रद्धांजली!

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

श्रेष्ठ मानव बनों ! **वेदों की ओर लौटो !**

वेद प्रतिपादित मानवीय

जीवन मूल्यों को

जन-जन तक पहुँचाने हेतु

कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन-एच. ३३३/र.नं.८/टी.इ. (७)१६७/२०४१,
स्थापना ५ मार्च १९७७)

मानव कल्याणकारी उपक्रम

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव-'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान - विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ-जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ-कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

वक्तृत्त्व स्पर्धा

सभा द्वारा परली में आयोजित राज्यस्तरीय विद्यालयीन वक्तृत्त्व स्पर्धा का उद्घाटन करते हुए सर्वश्री ज्ञानकुमारजी आर्य, भागवतराव आघाव, आर्य गुरुजी एवं गोवर्धनजी चाटे।

स्पर्धा में प्रथम पुरस्कार प्राप्त मुहंमद फरहाल को पुरस्कार प्रदान करते हुए सोममुनिजी एवं परीक्षक तथा अन्य कार्यकर्त्ता।

गौरव पुरस्कार

आर्यसमाज सम्भाजीनगर के कोषाध्यक्ष एड.श्री जोगेन्द्रसिंह चौहान को 'युवा गौरव' पुरस्कार प्रदान करते हुए कार्यकर्त्ता।

Reg.No.MAHBIL/2007/7493*Postal No.L/Beed/18/2015-17

सेवा में,
श्री.

प्रेषक -
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली-वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के संपर्क कार्यालय आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१५१५ (महाराष्ट्र) इस स्थान से प्रकाशित किया।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

जीवेत् शरदः शतम् !

॥ ओ३म् ॥

स्व.श्री.सदाशिवरावजी गुट्टे

आर्य समाज, परली-वैजनाथ, जि.बीड
के दिवंगत वरिष्ठ कार्यकर्त्ता, भजनोपदेशक
तथा कट्टर वेदानुगामी व्यक्तित्व
स्व.श्री.सदाशिवरावजी पाटलोबा गुट्टे
के द्वितीय स्मृतिदिवस (७ जून २०१७) के उपलक्ष्य में
उनकी धर्मपत्नी **श्रीमती सुशीलाबाई गुट्टे व परिवार**
की ओर से **वैदिक गर्जना** मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ भेंट

श्रीमती सुशीलाबाई गुट्टे